ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-1* Issue-10* January- 2017
Anthology : The Research

पारिवारिक अनुशासन के आधार पर बालकों में विभिन्न व्यक्तित्व कारकों का प्रभाव : जिला शाहजहाँपुर (उ०प्र०) के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय शोधात्मक अध्ययन

लक्ष्मी शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
जी० एफ० पी०जी० कॉलेज,
शाहजहाँपुर

सारांश

जिस व्यक्ति ने अपनी आयु का 15वां वर्ष पूर्ण न किया हो वह बालक की श्रेणी मे आता है। प्रस्तुत अध्ययन में 10 या 10 वर्ष से अधिक किन्तु 15 वर्ष से कम आयु के ऐसे व्यक्तियों को बालक माना गया है जो अपने परिवार के साथ रहते हैं। विभिन्न परिवारों में बालकों के व्यक्तित्व में अन्तर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है, साधारणतः बालक के व्यक्तित्व में अन्तर के लिए पैतृक कारणों को ही जिम्मेदार माना जाता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में बालक के व्यक्तित्व में अन्तर अथवा भिन्नता का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करके उसकी विस्तृत व्याख्या की गयी है तथा पारिवारिक अनुशासन के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न व्यक्तित्व कारकों एवं उनके बालकों के व्यक्तित्व पर प्रभाव के विषय में भी विस्तार से बताया गया है।

मुख्य शब्द : स्वैच्छिक – अपनी इच्छा से, भावात्मक – संवेदनात्मक अथवा भावपूर्ण, स्वप्रेरित – स्वतः प्रेरणा प्राप्त।

प्रस्तावना

बालकों के व्यक्तित्व में भिन्नता के लिये उत्तरदायी विभिन्न व्यक्तिगत कारकों पर पारिवारिक अनुशासन का भी बहुत प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक अनुशासन से अभिप्राय एक नियामक ढाँचे से है जिसका निर्माण विद्यार्थियों के अभिभावकों द्वारा परिवार के नियमों, मर्यादायों व परम्पराओं के रूप में किया जाता है और जिसका पालन करते हुए बालक को परिवार में रहना पड़ता है। सामान्यतः परिवार में तीन प्रकार की अनुशासन व्यवस्थाऐं हो सकती हैं–

एकाधिकारवादी अनुशासन व्यवस्था

"वह अनुशासन व्यवस्था जिसमें बालकों के वर्तमान व भविष्य से सम्बन्धित समस्त निर्णय केवल अभिभावकों द्वारा लिए जाते हैं, एकाधिकारवादी अनुशासन व्यवस्था कहलाती है।"

जनतान्त्रिक अनुशासन व्यवस्था

वह अनुशासन व्यवस्था जिसमें बालकों के वर्तमान व भविष्य से सम्बन्धित समस्त निर्णय अभिभावकों व बच्चों के बीच विचार–विमर्श द्वारा लिये जाते हैं, जनतांत्रिक अनुशासन कहलाती है।

हस्तक्षेप रहित अनुशासन व्यवस्था

वह अनुशासन व्यवस्था जिसमें बालकों के वर्तमान व भविष्य से सम्बन्धित निर्णय स्वयं बच्चे ही लेते हैं, हस्तक्षेप रहित अनुशासन व्यवस्था कहलाती है।

उपरोक्त अनुशासन व्यवस्थाओं के आधार पर बच्चों के व्यक्तित्व विभिन्नताओं के लिये उत्तरदायी व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन करना एवं वैज्ञानिक विश्लेषण कर प्रस्तुत शोध–पत्र में बालकों के व्यक्तित्व की विभिन्नताओं पर प्रकाश डाला जा रहा है–

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन हम निम्नलिखित प्रकार से कर सकते हैं–

1. पारिवारिक अनुशासन व्यवस्था के आधार पर बच्चों के व्यक्तित्व में विभिन्नता।
2. पारिवारिक अनुशासन व्यवस्था का बालक के व्यक्तित्व कारकों पर प्रभाव।
3. व्यक्तित्व कारकों के आधार पर बालकों के व्यक्तित्व में अन्तर।
4. बालकों के व्यक्तित्व को सही दशा एवं दिशा देने हेतु आवश्यक निर्देशों का चयन।
5. बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले व्यक्तित्व कारक तत्वों का विस्तृत अध्ययन।

बालक के आचरण, चरित्र, सामाजिक व्यवहार आदि गुणों को मिलाकर बनने वाला अभौतिक एवं आध्यात्मिक स्वरूप ही उसका व्यक्तित्व होता है। पारिवारिक अनुशासन का बालक के व्यक्तित्व कारक पर गहरा प्रभाव पड़ता है। 'मुख्यतः' 16 व्यक्तित्व कारक होते हैं, जिन पर पड़ने वाले प्रभावों को हम निम्नलिखित प्रकार से दे सकते हैं–

साइजोथेमिया – एफक्टोथेमिया (कारक–ए)

साइजोथेमिया

"जिस व्यक्ति के इसके कारक पर अंक कम होते हैं, वह बच्चा ठण्डे दिमाग वाला, शक्की और एकान्तवासी होता है। वह व्यक्तियों की अपेक्षा वस्तुओं को अधिक पसन्द करता है, अकेला कार्य करता है, विचारों में समझौता करने से बचता है। वह अपने कार्य करने के तरीकों तथा व्यक्तिगत आदर्शों में निश्चित तथा हठीला होता है। कभी–कभी वह आलोचात्मक, अड़ियल व सख्त भी हो सकता है।"

एफक्टोथेमिया

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर अधिक अंक होते हैं वह अच्छी प्रकृति वाला, सुविधा प्रिय (आराम–आराम से चलने वाला) भावुकतापूर्ण, सहयोगी प्रवृत्ति का, लोगों का ध्यान रखने वाला, कोमल हृदय, दयालु, समायोजनशील होता है। वह उन कार्यों को करना पसन्द करता है। जिसमें लोग सम्मिलित हों। वह क्रियाशील प्रवृत्ति वाले समूह को पसन्द करता है। वह व्यक्तिगत सम्बन्धों में सहनशील होता है। वह आलोचना से नहीं डरता।"

लोअर स्कोलेस्टिक मैण्टल कैपेसिटी – हायर स्कोलेस्टिक मैण्टल कैपेसिटी (कारक–बी)

लोअर स्कोलेस्टिक मैण्टल कैपेसिटी

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर कम अंक होते हैं वह धीरे–धीरे सीखने वाला मन्दबुद्धि वाला, दूसरों से सहयोग लेने वाला और केवल शाब्दिक व्याख्या करने वाला होता है। उसकी मूर्खता साधारणतया कम बुद्धि को परिलक्षित करती है अथवा धीमी कार्यप्रणाली मानसिक रोग के कारण हो सकती है।"

हायर स्कोलेस्टिक मैण्टल कैपेसिटी

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर अंक अधिक होते हैं वह तुरन्त विचार करने वाला, शीघ्र सीखने वाला बुद्धिमान और चौकन्ना होता है। संस्कृति स्तर व इस कारक में भी सम्बन्ध होता है।"

लोअर इगोस्ट्रैंथ (कारक–सी)

लोअर इगोस्ट्रेन्थ

"जिस व्यक्ति के कारक पर अंक कम होते हैं वह निराशा को कम सहन करने वाले, असन्तोषप्रद स्थिति वाले, परिवर्तनशीलता में नरम, वास्तविकता से पलायन करने वाले, शक्की, चिड़चिड़े, भावुक तकलीफ करने वाले और असन्तुष्टि मे अधिक क्रियाशील होते हैं। इनमें मानसिक रोगों जैसे–डर, निद्रा के लक्षण होते हैं व मनोशारीरिक दोष आदि। सी–कारक पर निम्न अंक लगभग सभी मानसिक रोगियों मे समान रूप से होंगे।"

हायर इगोस्ट्रैन्थ

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर अंक अधिक होते हैं वह स्वयं में परिपक्वता, स्थायित्व, जीवन में यथार्थवादी, उपद्रवहीन इगोस्ट्रेन्थ पर अधिकार करने वाला होगा। कभी–कभी अनसुलझी समस्याओं के साथ समझौता कर बैठता है।"

सबमिसिवनेस – डेमिर्नेन्स (कारक–इ)

स्बमिसिवनेस

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर अंक कम होते हैं उसकी प्रवृत्ति अन्यों को आगे लाने वाली, सीधी, प्रायः दूसरों पर निर्भरता स्वीकारने वाली, यथार्थ की चिन्ता को ध्यान में रखने वाली होती है, उसकी निश्चेष्टा कई मानसिक लक्षणों का एक भाग होती है।"

डेमिनेन्स

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर अंक अधिक होते हैं वह दृढ़तापूर्वक, स्वनिश्चित और स्वतन्त्र दिमाग वाला होता है। उसकी प्रवृत्ति कठोर, आक्रामक, शत्रुतापूर्ण अतिरिक्त दण्डात्मक, आज्ञात्मक और अमानवीय आज्ञा वाली, अधिकार की अवहेलना करने वाली होती है।"

डीसरजेन्सी – सरजेन्सी (कारक–एफ)

डीसरजेन्सी

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक कम होते हैं उसकी प्रवृत्ति नियन्त्रित कम बोलने वाली व अपने विचारों की होती है व भली भाँति विचारों में तैरता है। वह शान्त व सौम्य व्यक्ति होता है।"

सरजेन्सी

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं उसकी प्रवृत्ति प्रसन्नचित्त, क्रियाशील, बातूनी, स्पष्ट, प्रभावकारी व्यापक, चिन्तामुक्त होती है। वह प्रायः चुनिन्दा नेता की तरह चुना जाता है। वह आवेगी व चमकदार व्यक्तित्व वाला होता है।"

वीकर सुपर इगो स्ट्रेन्थ – स्ट्रोन्गर सुपर इगो स्ट्रेन्थ (कारक–जी)

वीकर सुपर इगो स्ट्रेन्थ

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक कम होते हैं उसकी प्रवृत्ति उद्देश्य से भटकाव की होती है। उसमें प्रायः सामयिक और समूह के प्रति जिम्मेदारी और सांस्कृतिक मानकों की कमी होती है। उसकी समाज व समूह के प्रभाव से मुक्तता उसे असामाजिक कार्यों की ओर प्रवृत्त करती है। परन्तु उसकी बन्धे बन्धायें नियमों से मुक्तता उसे मानसिक तनाव व दबाव से दूर रखती है।"

स्ट्रोन्गर सुपर इगो स्ट्रेन्थ

"जिस व्यक्ति के इस प्रकार पर अंक अधिक होते हैं वह चरित्र में उत्तम, कर्तव्य बोधयुक्त व्यापकता, योजनाबद्ध, क्षमा न करने वाली बारीकियों से भरा हुआ होता है। वह आमतौर पर समझदार व नैतिकपूर्ण होता है। वह मेहनत से कार्य करने वालों को महत्व देता है न कि मसखरों को।"

थ्रेकटिया – पारमिया (कारक–एच)

थ्रेकटिया

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक कम होते हैं, उसकी प्रवृत्ति लज्जाजनक, पीछे हटने वाली, सचेत आरामपसन्द पूर्ण होती है। इसमें प्रायः घटिया सोच होती है। उसकी प्रवृत्ति धीमी और भाषण में बाधक होती है। निजी सम्बन्धों वाले व्यवसायों को वह पसन्द नहीं करता। बड़े समहू की तुलना में वह एक या दो नजदीकी मित्रों को महत्व देता है। जो उसके चारों तरफ हो रहा है, उससे सम्पर्क का अभाव होता है।"

पारमिया

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं, वह सामाजिक, साहसी, नये विचारों का प्रयास करने के लिये हमेशा तैयार रहने वाला, स्वैच्छिक और भावात्मक व्यवहार से भरपूर होता है। वह लोगों के साथ कार्य करने में, आपसी व्यवहार में तथा भावात्मक परिस्थितियों में काफी कठिन परिस्थितियों को झेलने में सक्षम होता है। कार्य को वह बिना थके कर पाता है, यद्यपि वह सूक्ष्म विवरण के प्रति लापरवाह होता है और खतरनाक संकेतों को अनदेखा कर सकता है। उसकी प्रवृत्ति उद्यमी होती है और विपरीत लिंग में सक्रियात्मक रूचि रखने वाली होती है।"

हारिया – प्रेमसिया (कारक–आई)

हारिया

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक कम होते हैं उसकी प्रवृत्ति व्यवहारिक, वास्तविक, मर्दाना, स्वतन्त्र, उत्तरदायित्वपूर्ण होती है परन्तु वह कभी–कभी सख्त अविचलनशील, सनकी व असन्तुष्ट होता है। वह समूह को वास्तविक पूर्ण आधारों पर चलाने में सक्षम होता है।"

प्रेमसिया

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं वह नाजुक दिमाग वाला, दिवास्वप्न देखने वाला, कलाकार व चिड़चिड़े स्वभाव का होता है। वह कभी–कभी ध्यान, सहानुभूति, निर्भरता, अव्यवहारिकता की माँग करता है। वह असभ्य लोगों और अभद्र अवसरों को पसन्द नहीं करता। वह समूह की उपलब्धियों व प्रगति को धीमा करने की प्रवृत्ति रखता है।"

अलेक्सिया – प्रोटेन्शन (कारक'एल)

अलेक्सिया

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं उसकी प्रवृत्ति ईर्ष्यामुक्त, अनुकूलनीयता, प्रसन्नचित्ता, प्रतियोगताहीन, दूसरे लोगों के विषय में चिन्ता करने वाली व एक अच्छा टीम सदस्य की होती है।"

प्रोटेन्शन

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं, उसकी प्रवृत्ति अविश्वासपूर्ण एवं

सन्देह करने वाली होती है। वह अपने आन्तरिक जीवन में प्रायः अपने अहम्, अपनी विचारधारा एवं अपनी रूचि में ही लिप्त रहता है। वह दूसरे लोगों के विषय में कम चिन्ता करने वाला होता है। उसकी अपने ही ओर रहने की प्रवृत्ति उसे सामूहिक कार्यों में त्याज्य बना देती है।"

प्रेक्जरमिया – आँटिया (कारक–एम)

प्रेक्जरमिया

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक कम होते हैं उसकी प्रवृत्ति सही–सही कार्य करने की, व्यवहारिक मामलों में ध्यानशील और अन्य सम्भावनाओं पर दूसरों के निर्देशों का पालन करने की होती है। वह छोटी से छोटी सूचना का भी ध्यान रखता है तथा आपत्तियों में अपने को सक्षम बनाये रखता है, लेकिन कभी–कभी कल्पनाहीन भी होता है।"

आँटिया

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं उसकी प्रवृत्ति प्रतिदिन के मामलों में रूढ़िहीन, चिन्ताहीन, असुविधाजनक, स्वप्रेरित, कल्पनापूर्ण होती है। मुख्य व्यक्तियों और भौतिक वास्तविकताओं के साथ आवश्यक एवं स्पष्ट रूप से सम्बन्धित होती है। उसकी अन्तर्निर्देशित रूचियाँ अवास्तविक परिस्थितियों को जन्म देती हैं जिसमें अन्यों में विस्फोटक अभिव्यक्तियाँ जन्म लेती हैं उसकी व्यक्तिगत प्रवृत्ति सामूहिक क्रियाओं में उसको अस्वीकृत करने के लिए बाध्य करती हैं।"

आर्टलेसनेस – थ्रूडनेस (कारक–एन)

आर्टलेसनेस

"जिस व्यक्ति के इस कारक मे अंक कम होते हैं उसकी प्रवृत्ति शुद्ध भावुक और साधारण होती है। वह कभी–कभी अशिष्ट और भद्दा भी होता है परन्तु स्वाभाविक रूप से व आसानी से खुश और सन्तुष्ट हो जाता है।"

थ्रूडनेस

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं उसकी प्रवृत्ति शिष्ट, अनुभवशील, लौकिक, विचारशील होती है। वह प्रायः कार्यकुशल और विश्लेषणात्मक होता है। वह विभिन्न परिस्थितियों में भावुकता से मुक्त बुद्धिमान होता है।"

अन्टूबुल्ड एडीक्वेसी – गिल्टप्रोननेस (कारक–ओ)

अन्टूबुल्ड एडीक्वेसी

"जिस व्यक्ति के इस कारक मे अंक कम होते हैं उसकी प्रवृत्ति शान्तिपूर्ण व स्थिर स्नायविक तन्त्र वाली होती है। वह परिपक्व, चिन्ताहीन, विश्वासी व कार्यों को करने में दक्ष होता है। वह निर्भीक होता है परन्तु वह समूह के साथ मुख्य विषय में भावहीन रहता है। इसलिए उसे उदासीन और अविश्वासी कहना चाहिए।"

गिल्टप्रोननेस

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं उसकी प्रवृत्ति उदासीन, चिन्तापूर्ण, तंग करने वाली और चिन्ता करने वाली होती है। उसकी प्रवृत्ति बच्चों की तरह कठिनाईयों उतावलापन जैसी रहती है। वह समूह में अपने को स्वीकृत महसूस नहीं करता। पर अत्यधिक उच्च अंक रोगियों की श्रेणी में आता है।"

कंजरवेटिव – रेडिकलिज्म (कारक–क्यू)

कंजरवेटिज्म

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक कम होते हैं वह उसी में विश्वास करता है जो कि विश्वास करने के लिए बताया गया है। अनियमितताओं के बावजूद वह केवल उसे ही स्वीकार करता है जो प्रयुक्त होता रहा है और उचित पाया गया है, भले ही अन्य चीज बेहतर हो सकती हैं। वह नये विचारों के प्रति बड़ा सावधानीपूर्वक रूख अपनाता है। अतः वह परिवर्तन विरोधी होता है। वह धर्म व राजनीति में परम्परावादी होता है। वह बुद्धिमत्तापूर्ण विश्लेषण में अधिक रूचि नहीं रखता है।"

रेडिकलिज्म

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं वह बौद्धिक मामलों में रूचि लेता है तथा मूलभूत विचारों के शंकालु होता है। कभी पुराने कभी शंकालु और तहकीकात वाले विचारों को महत्व देता है। उसकी प्रवृत्ति अधिक सूचनायुक्त होने की ओर कम झुकी हुई, सामान्य जीवन में प्रयोग की तरफ अधिक तथा सुविधा के अनुसार बदलने में अधिक सहनशीलता की होती है।"

ग्रुप अडहियरेन्स – सैल्फ सफिशियेन्सी (कारक–क्यू 2)

ग्रुप अडहियरेन्स

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर अंक कम होते हैं, वह दूसरे लोगों के साथ कार्य व

निर्णय को महत्व देता है। उसकी रूचि और निर्भरता समाज की स्वीकृति और सराहना पर होती है। उसकी प्रवृत्ति वर्ग के साथ चलने की होती है। उसमें व्यक्तिगत दृढ़ संकल्प की कमी होती है। वह इच्छा से सामूहिक नहीं होता अर्थात् वह इच्छा समूह से नहीं जुड़ता, वरन् उसे स्वयं समूह के सहयोग व सहायता की आवश्यकता होती है।"

सैल्फ सफिशियेन्सी

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं वह मानसिक स्वभाव में स्वतन्त्र, अपने हिसाब से चलने का आदी होता है। अपने आप ही निर्णय लेता है, पब्लिक, विचारधारा को छोड़ देता है। इसी वजह से वह अपने सम्बन्ध दूसरों के साथ नहीं कर पाता। वह लोगों को नापसन्द नहीं करता परन्तु वह उनसे सहमति की आवश्यकता नहीं समझता।"

लो इन्टीग्रेशन – हाई सैल्फ कान्सेप्ट कन्ट्रोल (कारक–क्यू 3)

लो इन्टीग्रेशन

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक कम होते हैं वह आन्तरिक आवाज से नियन्त्रित नहीं होता। वह पूर्ण रूप से समझदार, सावधान एवं मेहनत करने वाला नहीं होता। वह असमयोजित अनुभव करता है।"

हाई सैल्फ कान्सेप्ट कन्ट्रोल

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर अंक अधिक होते हैं उसकी प्रवृत्ति संवेग एवं सामान्य व्यवहार पर कठोर नियन्त्रण रखने वाली होती है। वह सामाजिक रूप से चौकन्ना होता है, सावधान रहता है। वह प्रसन्नचित्त एवं आत्मसम्मान प्रिय होता हैं समाज को महत्व देता है, कभी–कभी उसकी प्रवृत्ति हठी एवं प्रभावशाली नेता की तरह होती है।"

लो एर्जिक टैन्शन – हाईएर्जिक टैन्शन

लो एर्जिक टैन्शन

"जिस व्यक्ति के इस कारक पर अंक कम होते हैं उसकी प्रवृत्ति गम्भीर, आरामप्रिय, शान्त और सन्तुष्ट होती है। कुछ परिस्थितियों में उसका अत्यधिक सन्तोषी होना उसे आलसी बना देता है जिसमें निम्न उपलब्धियाँ जन्म लेती हैं। कभी–कभी जब वह अति तनावग्रस्त होता है तो उससे सामूहिक गतिविधियाँ वाधित होती है।"

हाईएर्जिक टैन्शन

"जिस व्यक्ति के इस कारक में अंक अधिक होते हैं उसकी प्रवृत्ति, उत्तेजनीय, अशान्त, चिड़चिड़ी, व्यग्र (उतावलापन) की होती है। वह प्रायः थकान महसूस करता है। परन्तु वह अक्रियाशील नहीं रह पाता। समूहों में वह एकता को व नेतागिरी को अच्छा नहीं मानता। उसकी निराशा बहुत अधिक उत्तेजित मगर असन्तुष्ट प्रमोद को प्रदर्शित करती है।"

निष्कर्ष

परिवार विद्यार्थी की प्रथम पाठशाला है। परिवार का वातावरण अर्थात् परिवार के अनुशासन आर्थिक–सामाजिक स्थिति, निवासीय स्थिति तथा शैक्षिक स्थिति आदि का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक वातावरण वृहद क्षेत्र वाला प्रभावशाली कारक हैं इसके अन्तर्गत यद्यपि परिवार की शैक्षिक, धार्मिक, निवासीय, आर्थिक व सामाजिक स्थिति आदि को सम्मिलित किया जाता है, किन्तु इन सब स्थितियों से अधिक प्रभावी परिवार में अनुशासन की स्थिति होती है। पारिवारिक अनुशासन का बालकों के व्यक्तित्व निर्माण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक अनुशासन ऐसा आत्मनियंत्रण एवं आत्म निर्देशन है जो बालक को एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करता है। भारत में तीन प्रकार की प्रचलित पारिवारिक अनुशासनात्मक व्यवस्थाओं में दमनात्मक, युक्तात्मक तथा प्रजातंन्त्रात्मक व्यवस्थायें हैं। दमनात्मक अथवा एकाधिकारवादी अनुशासन व्यवस्था के अन्तर्गत बालकों पर दण्ड का भय दिखाकर अनुशासन स्थापित किया जाता है। हस्तक्षेप रहित अथवा मुक्तयात्मक अनुशासन व्यवस्था के अन्तर्गत बालकों को अपनी रूचियों आकांक्षाओं के अनुसार विकसित होने के लिये स्वतन्त्र छोड़ दिया जाता है। जबकि प्रजातन्त्रात्मक अनुशासन व्यवस्था मध्यमार्गीय व्यवस्था है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को स्वभाविक अभिरूचियों तथा प्रवृत्तियों में से अनुचित को प्रतिबन्धित किया जाता है और उचित को विकसित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण पर भिन्न–भिन्न प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहमद, ए.: "एक स्टेडी ऑफ रिलेशनशिप विटविन वेल्यूज एण्ड विद स्पेशल एफरेन्स टू कालिज गर्ल्स", सैकन्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इनएजूकेशन, एम०बी०बुच, 1972–77.
2. भल्ला, एस०के०: "ए कम्परेटिव स्टेडी ऑफ दा सेल्फ कान्सेप्ट ऑफ डीसीप्लेन्ड एण्डइन डीसीप्लेन्ड स्टूडेन्टस" सेकेन्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एम०बी० बुच, 1971–77.
3. बसन्त, राजकुमार : "सैल्फ कान्सेप्ट एण्ड एचीवमेन्ट इन स्कूल सबजेक्ट्सऑफ प्रोसपेक्टिव यूनिवर्सिटी एथेन्स" सैकेन्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एम०बी० बुच, 1972.
4. भटनागर, इन्दु : "ए स्टेडी ऑफ सम फैमिली केरेक्टीस्टिक्स एज रिलेटिड टू सैकेन्डरी स्कूल्स स्टूडेन्टस एक्टिविजय, वेज्यूज एडजस्टमेन्ट एण्ड स्कूल लर्निंग", पी–एच०डी० थीसिज मेरठ यूनिवर्सिटी, मेरठ, 1984.
5. चिरकाल, जी०एस०जे० : ए स्र्टेडी ऑफ स्टूडेन्ट सर्विस इन सलेक्टिड कालिजिज इन मद्रास", डिपार्ट ऑफ सोशल वर्क लायला कालिज मद्रास, 1970.
6. चौबे, गीता : "क्रिएटीविटी एण्ड सैल्फ कान्सेप्ट जनरल ऑ एजूकशनल रिसर्च एण्ड एकसटैशन", वोल्यूम 25, 1989, पृ० 52.
7. देव, पी० : "सैल्फ कान्सेप्ट ऑफ डीसीपिलिन एण्ड इनडीसीपिलिन स्टूडेन्ट्स डिपार्टमेन्ट ऑफ एजूकेशन", पंजाब यूनिवर्सिटी, 1967.
8. राजपूत, ए०एस० :"स्टेडी ऑफ एचीवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्टस इन मेथमेटिक्स इन रिलेशन टू देयर इन्टेलीजेन्स एचीवमेन्ट मोटीवेशन एण्ड शोसोइक्नोमीटेक्स" पी–एच०डी० एजूकेशन पंजाब यूनिवर्सिटी, 1984, एम०बी० बुच फोर्थ सर्वे, पृ० 845.
9. सूद, रमन :"ए स्टेडी ऑफ एकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ प्री–इन्जीनियरिंग स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू से" जनरल ऑफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड एक्सटेन्शन वोल्यूम–26, नं०–4, 1990, पृ० 37.
10. श्रीवास्तव, जे० पी० : "ए स्टेडी ऑफ दा इफैक्ट ऑफ एकेडमिक मोटीवेशन एण्ड पर्सनल्टी करेक्टि स्टिक्स ऑन दा एकेडमी एचीवमेन्ट ऑफ वायस रीडिंग" (डाक्टरल डिजरटेशन, एजूकेशन यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान), 1974.
11. सोलंकी, आर०बी० : "ए स्टेडी ऑफ दा होम एन्वायरमेन्ट सोशियो–इक्नोमिक स्टेटस एण्ड इकोनोमि मैनेजमेण्ट इन रिलेशन टू दा एकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ दा फर्स्ट ईयर कालिज स्टूडेन्ट्स ऑफ एम०एस० यूनिवर्सिटी, पी–एच०डी० एजूकेशन एम०एस० यूनिवर्सिटी बड़ौदा, एम०बी० बुच थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1978–83.
12. सिंह, एस० : "रिलेशनशिप ऑफ होम इन्वायरमेन्ट नीड फॉर एचीवमेन्ट एण्ड एकेडमिक मोटीवेशन विद एकेडमिक एचीवमेन्ट", पी–एच०डी० साइकोलाजी, एम० बी० बुच एजूकेशन फोर्थ सर्वे रिसर्च इन एजूकेशन, 1984–89, वोल्यूम फर्स्ट 1934.
13. टण्डन, वी० के० :"ए स्टेडी ऑफ एटिट्यूटस टूवर्ड रिलेशन ऑफ हायर सैकेन्ड्री स्कूल स्टूडेन्टस इन यू०पी० टाउन", डाक्टरल डीजरटेशन एम०बी० बुच सैकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, 1972, पृ० 132.